ISSN: 2249-894X Impact Factor :3.8014(UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | October - 2016

Review Of Research

हिंदी कविता में अम्बेडकरी चेतना

डॉ. मारुती शिंदे

सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र ,

वालचंद कला व विज्ञान महाविद्यालय , सोलापुर.

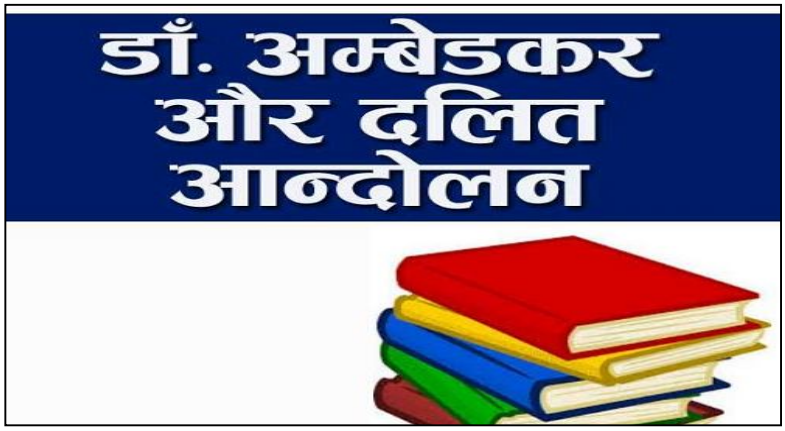

प्रस्तावना :

भारतवर्ष के जनजीवन में बीसवीं सदी का विशेष महत्व रहा है । इन सौ वर्षो में भारतीय जनता ने अनेक आंदोलनों को देखा है । इतिहास के पन्नों से हम पाते हैं कि एक ओर आजादी का आंदोलन अंग्रेजों की गुलामी को नष्ट करने पर तुला था , तो दूसरी ओर म. फुले द्वारा प्रवर्तित डॉ. अम्बेडकर के नेतृत्व में चला अछूतोद्धार का आंदोलन अपने ही उच्चवर्गीय भाईयों की गुलामी से मुक्त होने के लिए प्रस्थापित व्यवस्था का विद्रोह कर रहा था । इन आंदोलनों में हिंदी साहित्य का विशेष योगदान रहा है । आधुनिक काल के आरंभ से ही हिंदी साहित्य ने विविध विचार प्रणालियों को अपनाकर आंदोलनों को बल दिया है । इन सभी आंदोलनों में हिंदी साहित्य ने मानव मुक्ति के आंदोलन को बडी गंभीरता से और प्रामाणिक रूप में पोषित किया है । यह वैचारिक धारा भारतेंदु युग से प्रवाहित होकर दलित विमर्श तथा अम्बेडकरी चेतना तक निरंतर बहती रही है और दिन-ब-दिन सशक्त होती गई है । बीसवीं सदी के अंतिम तीन दशकों का हिंदी साहित्य में विशेष गंभीर योगदान रहा है । सन 1970 के आगे हिंदी साहित्य में विविध आंदोलन उभरे और सशक्त होते गए । सन 1936 से प्रवर्तित प्रगतिशील विचारों की धारा उत्तरोत्तर पुष्ट होती गई । और बीसवीं सदी के अंत तक आते-आते वह मानवाधिकार की हिमायती बन गई । उत्तरशती में हिंदी कविता ने विविध आंदोलनों को पनपते देखा और पुष्ट किया । इन सारे आंदोलनों मे दलित साहित्य धारा में अम्बेडकरी चेतना की चर्चा साहित्य विमर्श के केंद्र में रही है । विशेषत: दलित विमर्श

बीसवीं शती के अंतिम दशक में साहित्य चर्चा का प्रमुख विषय रहा है । जिसका मूल स्त्रोत मराठी भाषा के दलित साहित्य में रहा है । सन 1960 के बाद मराठी में दलित साहित्य मुख्य धारा के रूप में स्थापित हो गया था । अन्य भाषाओं में सन 1980 के बाद दलित साहित्य पर चर्चा आरंभ हुई और इसी क्रम में शती के अंतिम दशक में अम्बेडकरी चेतना चर्चा के केंद्र में आ गयी । उक्त मत का अर्थ यह नहीं है कि उसके पहले दलित जीवन हिंदी साहित्य में अछूता रहा है । दलित साहित्य सातवे दशक में एक आंदोलन के रूप में उभरा और एक स्वतंत्र विचारधारा के रूप में उसका अस्तित्व अंतिम दशकों तक आते-आते स्थापित हो गया ।

साहित्य के क्षेत्र में दलित साहित्य धारा के अंतर्गत अम्बेडकरी चेतना की चर्चा आज केवल भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि आंतर्राष्ट्रीय मंचो पर भी निरंतर होती है । हिंदी साहित्य में आज अम्बेडकरी चेतना पर काफी चर्चा जोरशोर से होती है । लेकिन इसकी व्याख्या प्रेरणा स्त्रोत आदि बातों पर काफी विवाद है । इसलिए अम्बेडकरी चेतना की व्याख्या पर विचार करना आवश्यक बन जाता है । वस्तुतः दलित साहित्य का जन्म मराठी साहित्य में हुआ । सन 1960 के इर्द-गिर्द अम्बेडकरी विचारधारा से प्रभावित दलित कार्यकर्ता और अम्बेडकरी अनुयायी लिखने लगे तो उन्होंने अपनी साहित्य धारा को दलित साहित्य नामक संज्ञा दी । अत: स्पष्ट है कि दलित साहित्य की मूल प्रेरणा फुले-अम्बेडकरवाद है , जो हर प्रकार के शोषण के विरुद्ध संघर्ष का झंडा गाड देता है और उसे क्रांति में बदलकर शोषण मुक्त समाज का संकल्प करता है । यही प्रेरणा ही अम्बेडकरी चेतना कहलाई जाती है । कुछ विद्वान इसे दलित चेतना भी कहते हैं । अम्बेडकरी चेतना का मुख्य लक्ष्य शोषण मुक्त समाज का निर्माण है । इस दृष्टि से देखा जाय तो अम्बेडकरी चेतना सारी जातिगत सीमाएँ लाँगकर मानवाधिकारवादी बन जाती है और विश्व की सीमाएँ पादाक्रांत कर लेती है । ' चेतना शब्द का संबध मनोविज्ञान से हैं। मनोविज्ञान के अनुसार — मानव की प्रमुख विशेषता चेतना है अर्थात वस्तुओं,विषयों तथा व्यवहारों का ज्ञान , चेतना स्त्री लिंग शब्द है । चेतना शब्द का संबंध संस्कृत के मूल शब्द चित्त या चेतन से है । इस शब्द का संदर्भ चेतन से है । चेतनामय का अर्थ होता है , जिसमें जीव है ।'[1] चेतना के प्रस्तुत अर्थ को ध्यान में रखकर यदी हम **अम्बेडकरी चेतना** की बात करें तो यह कहना होगा कि अस्पृश्य या दलित समाज चेतनाहीन अर्थात प्राणहीन ही था , इसमें प्राण फूंकने का काम डॉ. अम्बेडकर जी ने कठोर परिश्रम लेकर किया । ' दलित चेतना शब्द में दो शब्द है — दलित और चेतना । दलित शब्द जाति वाचक नहीं है किंतु समाज एवं समूह का बोध होता है । अत: दलित चेतना सामूहिक चेतना के अंतर्गत है । दलित चेतना से हमारा तात्पर्य है —

★ दलितों की अपने अस्तित्व के प्रति अहसास अथवा अनुभूति ।
★ दलितों को अपने अधिकारों का अहसास यानी चेतना ।
★ समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका की समझ ।' [2]

यहाँ अम्बेडकरी चेतना का अर्थ दलितों के मन में अपने मनुष्य होने का अहसास है । उपरोक्त बातों को हम गौर से देखें तों पता चलेगा कि दलित समाज में जो अपने होने का अहसास अर्थात अस्मिता जगी है वह केवल और केवल डॉ. अम्बेडकर के कारण ही जगी है । इसलिए दलित साहित्यकारों का मानना है कि डॉ. अम्बेडकर का व्यक्तित्व उनकी विद्वत्ता , उनका जीवन संघर्ष और दर्शन ही दलितों के अहसास की प्रेरणा है । डॉ. गंगाधर पानतावणे जी की यह मान्यता रही है कि -'दलित साहित्य की प्रेरणा न मार्क्सवादी है , न हिंदूवाद , न निग्रो साहित्य । दलित साहित्य और दलित चेतना की प्रेरणा केवल अम्बेडकरवाद है ।' [3] यही अम्बेडकरवाद ही दलित रचनाकारों को आत्मभान देता है और वह मनुष्यता का झंडा फहराकर प्रस्थापित विषमतावादी व्यवस्था को नकारता है । दलित आंदोलन में अम्बेडकरवाद, अस्मिता या चेतना का काम करता है क्योंकि डॉ. अम्बेडकर ही इनकी मुक्ति आंदोलन की प्रेरणा रहे हैं क्योंकि बीसवीं सदी के प्रारंभ मे ही डॉ. बी . आर . अम्बेडकर इनके

प्रर्तीनिधि बनकर प्रस्थापित व्यवस्था के विरोध में उतरे । उन्होंने साऊथ ब्यूरो कमिटी , सायमन कमिशन , गोलमेज परिषद आदि मंचो पर अस्पृश्यों के अधिकार की मांग रखी । साथ ही उन्होंने अस्पृश्यों के सुधार के लिए काफी सामाजिक आंदोलन चलाए । महाड के तालाब का आंदोलन , नासिक के कालाराम मंदिर प्रवेश का आंदोलन तथा अन्य आंदोलनों के माध्यम से गलितगात्र अछुत समाज में प्राण फूंकने का काम किया । दलितों का आंदोलन छेडने से पहले डॉ. अम्बेडकर ने नारा दिया कि ' गुलाम कों उसके गुलाम होने का अहसास करा दो , ताकि वह विद्रोह करेगा । ' डॉ. अम्बेडकर का यह मंत्र दलितों में प्राण फूंकने में सफल हुआ और दलितों में आत्मसम्मान की ज्वाला भडक उठी और सारे भारत में अम्बेडकरी चेतना की लहर चल पडी ।

हिंदी साहित्य में अंतिम दो दशकों में जो अम्बेडकरवादी कविता स्वतंत्र काव्यधारा मे उभर कर आई है वह मराठी के दलित आंदोलन का परिणाम है । मराठी दलित कविता का विद्रोह सारी विषमतावादी समाज व्यवस्था को तहस-नहस करके समता प्रस्थापन का ऐलान करता है । हिंदी की अम्बेडकरवादी कविता इसी भूमिका कों लेकर आगे बढी है । दलित कविता कभी लोकगीत के रूप में तो कभी रैदास और कभी अम्बेडकर के जीवन और विचारों के काव्यात्मक आख्यानों के रूप में निरंतर विकसित होती रही । लेकिन साठ के दशक में मराठी के दलित कवियों ने अपनी विद्रोही चेतना से संपूर्ण प्रस्थापित मराठी साहित्य की नींव हिला दी । जिसके कारण उसे देश में ही नहीं विदेशों में भी मान्यता प्राप्त हुई । उसीसे प्रेरित होकर हिंदी के कवियों ने भी अम्बेडकरवादी कविता का सृजन किया जो अब प्रतिकृत होकर स्थापित हो गई है । यद्यपि हिंदी साहित्य में दलित कविता की परंपरा विद्रोही कवि रैदास और कबीर से लेकर हीरा डोम और अछूतानंद तक 500 वर्षो की है , फिर भी अम्बेडकरवादी कविता स्वतंत्र विचारधारा के रूप में उत्तरशती में उभरी है ।

हिंदी अम्बेडकरवादी कविता को प्रमुख धारा के रूप में स्थापित करने में ' **पीडा जो चीख उठी** ' तथा ' **दर्द के दस्तावेज** ' इन दो काव्य संकलनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ' पीडा जो चीख उठी ' में पच्चीस कवियों की दो-दो कविताएँ संकलित है । इस काव्य संग्रह पर साहित्य जगत में कोई विशेष चर्चा नहीं मिलती । डॉ. एन. सिंह द्वारा संपादित ' दर्द के दस्तावेज ' कवीता संग्रह को ही प्रथम हिंदी दलित कविताओं के संकलन के रूप में मान्यता मिली है । श्री राधेश्याम तिवारी जी ने इस संबंध में लिखा है — ' यह संग्रह दलित साहित्य के चयन की दिशा में एक स्मरणीय प्रयास है । ' [4] संग्रह के कवि डॉ. प्रेमशंकर , डॉ. सुखवीर सिंह , डॉ. चंद्रकुमार वरढे , ओमप्रकाश वाल्मीकि , डॉ. राम शिरोमणी होरील , डॉ. दयानंद बटोही , डॉ. एन . सिंह , डॉ. भूपसिंह और रघुनाथ प्यासा है । डॉ. एन. सिंह ने ही ' **चेतना के स्वर** ' नामक एक और दलित कविता का संकलन अभिरुचि प्रकाशन दिल्ली से सन 1998 में प्रकाशित किया है । हिंदी साहित्य में अम्बेडकरवादी कविता आज उन्नति की कगार पर है । आज इस कविता में नित नई संभावनाएँ खुल रही है। क्योंकि दलित कविता का विषय आम आदमी है । आम आदमी ही इसकी असली शक्ति है । इस शक्ति को अम्बेडकरी दर्शन का आधार देकर अम्बेडकरवादी कवि व्यवस्था परिवर्तन की लडाई निरंतर लड रहा है । इसमें डॉ. रामशिरोमणी होरील , श्री माताप्रसाद , श्री लालचंद्र राही , डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी , मोहनदास नैमिशराय , डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर , डॉ. दयानंद बटोही , डॉ. जयप्रकाश कर्दम , डॉ. सुखवीर सिंह , डॉ. प्रेमशंकर , डॉ. एन. सिंह , डॉ. श्योराज सिंह , बैचेन तथा ओमप्रकाश वाल्मीकि के नाम शीर्षस्थ है। इन प्रमुख कवियों के अलावा डॉ. मनोज सोनकर , कंवलभारती , सूरजपाल चौहान , डॉ. कुसुम वियोगी, लक्ष्मी नारायण सुधाकर , कर्मशील भारती , ईशकुमार गंगानिया , मलखानसिंह आदि कवियों ने अम्बेडकरवादी कविता की धारा पुष्ट की है । आज हिंदी दलित कविता की नित नई संभावनाएँ खुल रही है। दलित साहित्य दिन-ब-दिन सफलता की चोटियाँ पार कर रहा है । डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर की विचारधारा से पोषित हिंदी दलित काव्यधारा है जो अम्बेडकरी चेतना से ओतप्रोत है । इस चेतना को स्पष्ट रूप से स्पष्ट करना ही प्रस्तुत आलेख का प्रमुख उद्देश्य है ।

हिंदी कविता में अम्बेडकरी चेतना –

अम्बेडकरवादी साहित्य दलित जीवन के सत्य को उजागर करनेवाला साहित्य है । अत: अम्बेडकरवादी साहित्य में दलित जीवन की सभी स्थिति गतियों का चित्रण स्वाभाविक है । इसमें दलित ने भोगी हुई पीडा , हिंदू धर्म शास्त्रों का षड्यंत्र , पाखंडो का इन्कार करने की प्रवृत्ति तथा मनुष्य को आजाद बनाने के लिए व्यवस्था का विरोध , साथ ही मनुष्य को मनुष्य से जोडने की भावना तथा आधारहीन , तर्कहीन धार्मिक कल्पनाओं को नकारने के लिए विज्ञान का सबल आधार आदि बातों का जीक्र अनायास ही दलित साहित्य मे आता है । इन्हीं बातों को अम्बेडकरवादी साहित्य के तत्वों के रूप में समीक्षक एवं विद्वानों ने स्वीकृत किया है । ' विद्रोह , विज्ञान , निष्ठा और विश्वमयता ये दलित साहित्य के तीन अस्त्र है । दलित साहित्य का क्रांतिकारी तत्व उन्हीं तीन सुत्रों में है ऐसा कहा तो गलत नहीं होगा । साहित्य भले ही स्वायत्त हो फिर भी समाज में होनेवाले परिवर्तन का , समाज के अंतरंग का , संवाद-विसंवाद का अन्वयार्थ लगाकर ही सामाजिक अर्थवत्ता का शोध करना पडता है।'[5] हिंदी कविता में अम्बेडकरी चेतना का विश्लेषण वेदना , विद्रोह , नकार , विज्ञान निष्ठा और वैश्विकता के आधार पर निम्न स्वरूप में किया जा सकता है –

वेदना –

वेदना अम्बेडकरवादी साहित्य की महत्वपूर्ण कसौटी मानी जा सकती है । मूलत: दलितों के अनुभवों की अभिव्यक्ति ही वेदना के रूप में सर्वप्रथम हुई है । धर्मसत्ता और समाजसत्ता के कठोर नियमों का पालन करनेवाला अस्पृश्य समाज अपने जीवन के दाहक अनुभवों को व्यक्त करता रहा । भारतीय समाज व्यवस्था में वर्ण श्रेष्ठता और श्रेणीबद्ध जातिप्रथा के कारण दलितों को अनेक पीडाएँ झेलनी पडी । इन पीडाओं का बयान ही वेदना है । जब दलित साहित्य की धारा उमड पडी तो सबसे पहले कविता के माध्यम से ही यह धारा उमड पडी । ' आधुनिक युग में दलितों के वेदना की अभिव्यक्ति पटना के हीरा डोम ने भोजपुरी में ' अछूत की शिकायत ' कविता लिखकर पहिली बार की थी जो सन 1914 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई । '[6] उत्तरशती तक आते-आते यह अभिव्यक्ति अधिक तीव्र बनकर सामाजिक भेदभाव , ऊंच-नीच और सामाजिक उत्पीडन से उपजा दर्द अम्बेडकरवादी की सामाजिक चेतना के केंद्र में आ गया – ' उठ मुझे याद आते है , बचपन के दिन , जब प्यास लगने पर खडा रहना पडता था घंटो ★ ★ ★ ★ एक मैं हूं , जिसकी न जाने कितनी पिढियाँ , रही प्यासी बिना पानी , युगों-युगों तक । '[7] अछूतों की ये पिढियाँ युगों-युगों तक राह देखते इसलिए खडी रही की समाज व्यवस्था में उनपर अस्पृश्यता का कलंक लग गया था । सवर्ण समाज इसे ईश्वर की करनी के रूप में देखता था। म. गांधी अस्पृश्यता को हिंदू समाज का कलंक मानते थे लेकिन डॉ. अम्बेडकर जी ने कहा था– यह हमारे शरीर पर लगा हुआ कलंक है । क्योंकि अस्पृश्यता के कारण ही अछूत समाज को अवहेलना और अपमानित जिंदगी झेलनी पडी । यह स्थिति स्वतंत्रता के बाद भी नहीं बदली । इस स्थिति के प्रति आक्रोश का भाव डॉ. सुशीला टाकभौरे की कविता से इस प्रकार फूट पडा है –

' कैसी स्वतंत्रता , कैसा लोकतंत्र ?
जानते नहीं , संविधान में मिले अधिकार
आज भी
नरक समाई के पुश्तैनी रोजगार में लगे
अभाव और अपमान का जीवन जी रहे है । '[8]

अम्बेडकरवादी कवि को यह टीस निरंतर सताती रहती है । उसपर लगा हुआ कुजाति का कलंक किसी भी प्रकार से निकल नहीं जाता डॉ. मलखान सिंह जी लिखते है –

‘ इस तथ्य को बचपन में ही
जान लिया था मैंने कि
पढने-लिखने से कुजात
सुजात नहीं हो जाता ।’ [9]

जातिय विषमता के कारण होनेवाला उत्पीडन एकलव्य और शंबूक के जमाने में ही था यह बात नहीं है वह डॉ. अम्बेडकर को भी बचपन से लेकर अंतिम समय तक झेलना पडा । और भी यह उत्पीडन निरंतर चलता रहता है केवल उसका ढंग बदल गया है । समय के साथ परिवर्तन की क्रिया के लिए डॉ. दयानंद बटोही ने दलित पीडा की अभिव्यक्ति इस प्रकार की है - ‘ अब दान में अंगूठा मांगने का साहस कोई नहीं करता , प्रैक्टिकल में फेल करता है , प्रथम अगर आता हूं तों छठा या सातवाँ स्थान देता है , जाति गंध टाईटल में खोजता है।’[10] अम्बेडकरवादी साहित्य में वेदना का अत्यंत महत्व है क्योंकि यह वेदना डॉ. अम्बेडकर के द्वारा उन्हें अपने मनुष्य होने के अहसास के बाद उमडी हुई है । इसीलिए वह अम्बेडकरी चेतना है और वह सारे समाज में व्याप्त है , सबकी है । वस्तुत: अपने उत्पीडन का बयान करता भी तो भारतीय समाज में अपराध माना जाता था । लेकिन अस्पृश्य समाज के मुक्तिदाता डॉ. अम्बेडकर ने इन सारी पाबंदियों को नष्ट किया और दलितों की यह वेदना उमड पडी । ‘ डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के विचारों से दलित समाज को अपनी गुलामी का अहसास हुआ । उनकी वेदना को वाणी मिल गई । इस मूक समाज को बाबासाहब के रूप में मूकनायक मिला । दलितों की वेदना ही दलित साहित्य की जन्मदात्री है । यह वेदना हजारों की हैं , हजारों वर्षो की हैं । इसलिए यह व्यक्त होते समय समूह स्वरूप में व्यक्त होती है। दलित साहित्य में वेदना एक ‘ **मैं** ’ की वेदना नहीं बल्कि वह तो पूरे बहिष्कृत समाज की वेदना है । इसलिए इस वेदना का स्वरूप सामाजिक बन गया है । ’ [11] अम्बेडकरवादी कवि अपनी व्यक्तिगत भूमिका समाज के सामने कभी नहीं रखता बल्कि वह संपूर्ण अस्पृश्य समाज का प्रतिनिधी बनकर समाज की संवेदना को व्यवस्था परिवर्तन की लडाई से जोडने का काम करता है ।

विद्रोह –

अम्बेडकरवादी कविता संपूर्ण सामाजिक परिवर्तन की मांग करती है । यह संपूर्ण सामाजिक परिवर्तन की मांग ही अम्बेडकरवादी कविता का विद्रोह है । भारतीय समाज मानस में जाति की भावना है । उस भावना ने दलित को निरंतर अपमान की गर्त में ही जीने के लिए बाध्य किया है । अगर मनुष्य को सम्मान की जिंदगी जीनी होगी तो जातिप्रथा का निर्मुलन उसका प्रथम लक्ष होता है । इसीलिए वह जातिप्रथा के समर्थन मे आगे आनेवाली हर चीज का विरोध करता है , चाहे वह ईश्वर हो धर्म हो या धर्म ग्रंथ अथवा इस धर्म को माननेवाला जनसमुदाय । इस विरोध से वह अपनी जीवन दृष्टि कों अभिव्यक्त करता है । जैसे –

‘ मेरे परदादा मर गए जूठन खाते
उतरे चिथडे पहनते
खेत बोते-जोतते
इसे पूर्व जन्म का फल मानते-मानते
इनका खून चूसते-चूसते
धर्म का भय दिखलाकर

नीच कर्मो का फल बताकर
पर
अब मैं पूर्व जन्म नहीं वर्तमान देखता हूं ।' [12]

भारतीय समाज व्यवस्था में अस्पृश्य समाज का भावनिक शोषण किया है धर्म, कर्म ,आत्मा, स्वर्ग , पूर्वजन्म , पुनर्जन्म आदि भ्रामक कल्पनाओं के जरिए उनका निरंतर उत्पीडन हुआ है। इसलिए उन्होंने सांस्कृतिक क्षेत्र में कडा विद्रोह किया है। विमल किर्ति के अनुसार - ' यह कविता पुरानी रूढी , परंपराओं , नैतिकताओं और आस्थाओं के प्रति विद्रोह करती है। अन्याय ,अत्याचार और शोषण पर टिकी संस्कृति सभ्यता को नकारती है , ऐसी संस्कृति सभ्यता शोषण करनेवालों की आस्थाओं पर थूकती है ।' [13] यही कारण है कि सुशील कुमारशील की कविताएँ मानवाधिकार की मांग करती है —

' सदीयों से तुम्हारी कौम , नीच , अपवित्र , तिरस्कृत ,
जिसे जन्मजात राजाओं ने
अंधकूप में धकेल
श्रद्धा और संस्कारों के छल से
किया निरंतर शोषण
परंपराओं के इस कुशासन के खिलाफ
पीढी -दर — पीढी मौत
ठहरो ,
अब विद्रोह जरूरी है ।' [14]

अम्बेडकरवादी साहित्य में प्रस्थापित व्यवस्था का विद्रोह यह एक निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है । क्योंकि समग्र सामाजिक परिवर्तन की लडाई तब तक खत्म नहीं होती जब तक समता और न्याय की प्रस्थापना नहीं होती । इसलिए प्रत्यक्ष मनुष्य का परिवर्तन होना आवश्यक है। मनुष्य कों बदलने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है । इसलिए अम्बेडकरवादी साहित्य तब तक विद्रोह की प्रवृत्ति कों निरंतर अपनाएँ रखेगा जब तक समाज में भेदभाव की नीति होगी और यह भेदभाव जातियता और अस्पृश्यता के आधार पर बना रहेगा । भारतीय समाज में लगा जातियता का दिमक नष्ट ही नहीं होता । सवर्णो की बात नहीं तो अछूत भी धार्मिक आंतक के कारण जाति को छोडने का साहस नहीं करते इसलिए अम्बेडकरवादी कविता दलित समाज की वेदना दु:ख तथा जीवन की सभी गतिविधियों को लेकर अपनी आवाज उठा रही है। ' वह समाज के प्रति अपने विद्रोह प्रकट करणे के पक्ष में है । जिन संप्रदायों ने मनुष्य को मनुष्य जैसा जीवन जीने से वंचित किया और उसकी जिंदगी को अन्याय , अत्याचार , बेबसी , लाचारी , गरीबी और गुलामी का पर्याय बना दिया था।' [15] केवल जाति के नाम पर होनेवाली यह प्रथा आदमी को आदमी के रूप में जीने नहीं देती । सभी अधिकरों से दूर रखकर उनपर अधिकार चलाना चाहती है —

' जाति , आदिम सभ्यता का
नुकीला औजार है
जो सडक चले आदमी को
कर देता है छलनी
एक तुम हो —

जो अभी तक इस मादरचोद जाति से चिपके हो
न जाने किस हरामजादे ने
तुम्हारे गले में
डाल दिया है जाति का फंदा
जो न तुम्हें जीने देता है
न हमें । ' [16]

जातिय संस्कार तब तक नष्ट नहीं होंगे जब तक दलित हिंदूओं के पक्ष में काम करेंगे । अत: कवि इस मानसिकता को नष्ट करने का आवाहन करता है —

' अब तुम्ही प्रकाश पुंज बनो
और क्रांति का जय जय करो
अणु विस्फोट से बडा विस्फोट अब करेंगे
दलितों की सत्ता विश्व भर स्थापित करेंगे । ' [17]

नकार —

नकार अम्बेडकरवादी साहित्य का महत्वपूर्ण तत्व है । वैसे यह भूमिका डॉ. अम्बेडकर से ही अम्बेडकरवादी साहित्यकारों की मिली है । नकार की प्रवृत्ति का अर्थ है — गलत चीजों को ना कहना या उनका इन्कार करना । वैसे अस्पृश्यों के जो आंदोलन छेडा गया उसका प्रारंभ और उसका समापन नकार की भूमिका को लेकर हुआ है । प्रारंभ है मनुस्मृति दहन और समापन है धर्मांतरण । जहाँ तक अम्बेडकरवादी साहित्य के नकार तत्व की बात है , अम्बेडकरवादी साहित्य ने भारतीय समाज में निहित धर्म , समाज , साहित्य , संस्कृति आदि स्तरों पर अपनायी हुई , परंपरागत दकियानुसी परंपरा , रीतिरिवाज , रस्में परंपराएँ , देवदेवताओं की कल्पना , पर्व , त्योहार , उत्सव तथा अभिजात साहित्य के समीक्षा सिद्धांत आदि बातों को नकारा । और स्वातंत्र्य, समता, न्याय और बंधुत्व की स्थापना के लिए अपना सर्वस्व दांव पर लगाया । इसकी पहल सबसे पहले अम्बेदकरवादी कविता ने की है । अम्बेडकरवादी कवि डॉ. अम्बेडकर की प्रेरणा से अपनी सदियों की गुलामी कों ठूकराते हुए कहता है —

' प्रज्ञा सूर्य ने फेंक दिया झाडू । दिया कलम हमारे हाथ ।
पिघल गयी परंपरा की गुलामी । जल गयी लाचारी । ' [18]

प्रस्थापित धर्म व्यवस्था ने राजसत्ता के द्वारा अछूतों को मजबूर बनाकर गुलामी की परंपरा चलाई और धर्म की दहशत फैला के रखी इसलिए अम्बेडकरवादी कवि राज व्यवस्था को भी ठूकराता है —

' अब सह नहीं हो सकता
कि तुम राजा बने रहो
पीढी -दर-पीढी
हम बने रहे तुम्हारी प्रजा
पीढी-दर-पीढी
अब राह नहीं हो सकता
कि तुम मालिक बने रहो

पीढी-दर-पीढी
हम बने रहे तुम्हारे गुलाम
पीढी-दर-पीढी ।' [19]

अम्बेडकरवादी कवि अभिजात साहित्य परंपरा को भी नकारता है –

' मैं तुम्हारे रचे शब्द के ,
सीने पर चढकर ,
बजाऊंगा डंका ,
विजयश्री का ,
क्योंकि अब मैं गुंगा नहीं ।' [20]

पशू-पक्षी और जलचरों में ईश्वर का रूप देखनेवाली हिंदुत्ववादी संस्कृति अपने ही देशवासियों और धर्मबांधवों कों अपवित्र मानकर सभी मानवीय अधिकरों से वंचित कर देती है । अम्बेडकरी विचारधारा के विद्रोही कवि जयप्रकाश कर्दम इतिहास का दाखिला देकर संपूर्ण हिंदुत्ववादी व्यवस्था को ही ठूकराता है–

' कभी शकों से
कभी हुणों से
कभी मुगलों से
कभी अंग्रेजो से
पराजित हुए थे तुम
उन्होंने
नहीं दी अमानवीय यातनाएँ
अस्पृश्य मानकर
जीत के उन्माद में
अंधे नहीं हो गए थे वे
मनुष्यता बाकी थी उनमें
हृदयहीन नहीं थे वे
तुम्हारी तरह ।' [21]

इस तरह अम्बेडकरवादी कवि अम्बेडकरी चेतना के जाग उठने पर सारी विषमतावादी व्यवस्था का इन्कार करता है ।

विज्ञान निष्ठा –

विज्ञान निष्ठा का अम्बेडकरवादी साहित्य आंदोलन से जन्मजात रिश्ता है । डॉ. अम्बेडकर जी ने भारत में जाति प्रथा और उससे संबंधित सारे प्रश्नों का जिक्र विज्ञानाधारित तर्कों के आधार पर ही किया है । अस्पृश्यता और जातिभेद का आधार हिंदू धर्मशास्त्र है । डॉ. अम्बेडकर जी ने इसे ही चुनौती दी है - ' गैरबराबरी हिंदू धर्म कि आत्मा है । हिंदू धर्म की नैतिकता , अंनैतिकता और अमानवीय है । जो अनैतिक और अमानवीय है , वह आसानी

से नीति विरुद्ध अमानुषिक और घृणित हो जाता है । हिंदू धर्म की आज यही तस्वीर है । इस प्रस्थापना पर जो लोग संदेह करते है या उसका खंडन करते है , उन्हें हिंदू समाज की सामाजिक संरचना जाँच करनी चाहिए और उसके कुछ तत्वों पर विचार करना चाहिए ।' [22] अम्बेडकरवादी कविता ठीक यही काम करती है । हिंदू विचार प्रणाली ने विषमता के समर्थन में ऋग्वेद के पुरुष सूक्त का जो पाखंड रचा है उस पर कई प्रश्न अम्बेडकरी चेतना के कवियों ने उठाए है । मोहनदास नैमिशराय ने तो ईश्वर के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगाया है —

' ईश्वर की मौत
उस पर होती है
जब मेरे भीतर उठता है सवाल
ईश्वर का जन्म
किस माँ की कोख से हुआ
ईश्वर का बाप कौन ? ' [23]

विद्रोही कवि जयप्रकाश कर्दम जी ने तो जन्म से संबधित सिद्धांत पर ही विज्ञान के आधार पर प्रहार किया है —

' ऋग्वेद कहता है
ब्राम्हण ब्रम्हा के मुख से
क्षत्रिय भुजाओं से
वैश्य जंघा से
और
शूद्र पैरों से पैदा हुआ है
परंतु विज्ञान कहता है गर्भधारणा करना
महिलाओं का काम है
और
संतान उत्पन्न होना
इसी का परिणाम है
पता नहीं फिर
ब्रम्हा ने कैसे
नारी तत्व अपना लिया
एक नहीं , दो नहीं चार-चार जगह
गर्भधारण कर लिया । ' [24]

अम्बेडकरी चेतना के इन कवियों ने उठाए हुए सवालों का जवाब हिंदू धर्म के धूरिनों के पास नहीं है ।

वैश्विकता —

वैश्विकता अम्बेडकरवादी साहित्य की एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व है । अम्बेडकरी साहित्य केवल अछूतों की पीडा का ही नहीं बल्कि सारे विश्व में व्याप्त वंचितों की पीडा का प्रतिनिधित्व करता है । यही कारण है कि वह निग्रो साहित्य से भी प्रेरणा ग्रहण करता है । डॉ. पानतावणे जी ने कहा है - ' वैश्विकता का अर्थ है ,मनुष्य मनुष्य में मुक्त संवाद । मनुष्य के बीच की सोहार्दता का साक्षात्कार माने वैश्विकता । दुनिया के दुःखी और पीडितों की

आधारशीला माने वैश्विकता । ' [25] यही कारण है कि अम्बेडकरवादी कवि दुनिया के सारे वंचितों का पक्ष लेकर नैसर्गिक स्त्रोतों पर बराबरी का हक जताता है-

' सतह से उठते हुए
मैंने जाना कि
इस धरती पर किए जा रहे
श्रम में
जितना हिस्सा मेरा है
इस धरती के
हवा, पानी और इससे उत्पन्न होनेवाले
उतना और धन में भी
अब मैं समझ गया हूं । ' [26]

इसी के बलबूते पर अम्बेडकरवादी कवि सारे संसार में परिवर्तन लाना चाहता है –

' ये कोटि-कोटि दलित , शोषित मानव
स्वयंसूरज बन जाएंगे ,
इनसे उपजी संतान ,
भावीपीढी संसार में युगपरिवर्तन लाएगी । ' [27]

स्पष्ट है अम्बेडकरी चेतना की कविता सारे विश्व के वंचित शोषितों का प्रतिनिधित्व करती है। यही कारण है कि अम्बेडकरवादी साहित्य की चर्चा वैश्विक संमेलन होती है ।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि अम्बेडकरवादी कविता आज के संवेदनशील , भावूक और प्रतिबद्ध कवि के मन का दस्तावेज है , जिसका शब्दों पर विश्वास तथा संविधान के प्रति निष्ठा , बुद्ध , बाबासाहब पर श्रद्धा यही उनकी पूँजी है । जातियता, छुआ -छूत , उच्च -नीचता और उनके धार्मिक आधारों कों नकारनेवाली यह कविता मानवता की रक्षक है । इससे कवि का मन सिहर उठता है । मानवता की हत्या करने पर उतारू जातिभेद ,धर्मभेद ,भाषाभेद को अम्बेडकरवादी कविता ध्वस्त करना चाहती है । मानवों की एकता और मनुष्यता की आवश्यकता का लक्ष पूरा करने को नैतिक कर्तव्य माननेवाली आज की अम्बेडकरवादी कविता विद्रोही होकर भी एकता की पक्षधर है । यही उसकी अम्बेडकरी चेतना है ।

संदर्भ सूची –

1 –सार्थ जोडणी कोश , गुजरात विद्यापीठ , पृष्ठ 314 , डॉ. नरसिंहदास वणकर , दलित विमर्श , पृष्ठ 39 से उद्धृत
2 – महिप सिंह , चंद्रकांत बांदिवडेकर , हिंदी साहित्य में दलित चेतना , पृष्ठ -99
3 – हिंदुस्तानी जबान मनोद् धृत बाबूराव बागूल अप्रैल्जून 1997 पृष्ठ - 4
4 – सं रमणिका गुप्ता , हिंदी साहित्य में दलित संघर्ष के उन्नायक डॉ. एन. सिंह
5 – डॉ. संजय नवले , डॉ. गिरीश काशिद , दलित साहित्य : प्रकृति और संदर्भ पृष्ठ - 100
6 – डॉ. रश्मि चतुर्वेदी , हिंदी दलित साहित्य की विविध विधाएँ , पृष्ठ -17
7 – ओमप्रकाश वाल्मीकि , ' बस्स बहुत हो चुका ' पृष्ठ – 55

8 – डॉ. सुशीला टाकभौरे – हमारे हिस्से का सूरज -पृष्ठ-10
9 – डॉ. मलखान सिंह , सुनो ब्राम्हण पृष्ठ- 16
10 – दयानंद बटोही , दर्द के दस्तावेज , पृष्ठ - 112
11 – डॉ. शरणकुमार लिंबाळे , दलित साहित्य का सौंदर्यात्मक , पृष्ठ - 39
12 – सोहनपाल सुमनाक्षर , अंधा समाज और बहरे लोग , पृष्ठ - 17-18
13 – विमल कीर्ति सं. अंगुत्तर जन-मार्च 1995 , पृष्ठ – 84
14 – सुशील कुमार शीलू :नई संस्कृति का भ्रूण , पृष्ठ -12
15 – रमणिका गुप्ता , दलित चेतना साहित्य , पृष्ठ -127
16 – रमणिका गुप्ता , युद्धरत आम आदमी , पृष्ठ -10
17 – विभूति नारायण राम , वर्तमान साहित्य , अप्रैल 2009 ,पृष्ठ-15
18 – प्रा. दामोदर मोरे - नीले शब्दों की छाया में , पृष्ठ -20
19 – कंवल भारती , तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती ,
20 – डॉ. सूरजपाल चौहान - अब मैं गूंगा नहीं, पृष्ठ -40
21 – जयप्रकाश कर्दम -गूंगा नहीं था मैं
22 – हरपालसिंह अरुष , दलित साहित्य की भूमिका , पृष्ठ - 18
23 – मोहनदास नैमिशराय - आग और आंदोलन , पृष्ठ - 56
24 – जयप्रकाश कर्दम , तिनका-तिनका आग , पृष्ठ -15
25 – डॉ. गंगाधर पानतावणे , अध्यक्षीय भाषण , नवोदितांचे दलित साहित्य संमेलन पीपंरी चिंचवड , पृष्ठ -8
26 – डॉ. एन. सिंह , सतह से उठते हुए , पृष्ठ-11
27 – डॉ. सुशील टाकभौरे – हमारे हिससे का सूरज , पृष्ठ - 10